भारत सरकार

रेल मंत्रालय

लोक सभा

30.03.2022 के

अतारांकित प्रश्न सं. 4595 का उत्तर

कोयला ढुलाई रेल परियोजनाएं

4595. श्री मनोज तिवारी:
श्री रविन्दर कुशवाहा:
श्री रवि किशन:
श्री सुब्रत पाठक:
श्री संजय सदाशिवराव मांडलिक:
श्री सुधीर गुप्ता:
श्री बिद्युत बरन महतो:
श्री प्रतापराव जाधव:
श्री श्रीरंग आप्पाबारणे:
श्री धैर्यशील संभाजीराव माणे:

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार का घरेलू कोयले की परिवहन लागत को कम करने के लिए त्वरित परिवहन के लिए 14 महत्वपूर्ण कोयला ढुलाई रेल परियोजनाओं को चालू करके भारतीय रेलवे के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने का विचार है;

(ख) यदि हां, तो उक्त प्रयोजन के लिए चयनित परियोजनाओं के नाम क्या हैं;

(ग) इन परियोजनाओं की वर्तमान में प्रगति और स्थिति क्या हैं;

(घ) क्या रेलवे देशभर में बिजली उत्पादन संयंत्रों को कोयले की आपूर्ति के लिए एक समर्पित माल गलियारा विकसित/निर्मित करने पर विचार कर रहा है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ड.) क्या रेलवे ने ऐसे गलियारों की पहचान की है और इसकी व्यवहार्यता का अध्ययन किया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(च) ऐसे गलियारों से परिवहन लागत और राष्ट्रीय ट्रांसपोर्टर पर दबाव को कम करने में किस हद तक मदद मिलने की संभावना है?

उत्तर

रेल, संचार एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री

(श्री अश्विनी वैष्णव)

(क) से (च): विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

****

कोयला ढुलाई रेल परियोजनाओं के संबंध में 30.03.2022 को लोक सभा में श्री मनोज तिवारी, श्री रविन्दर कुशवाहा, श्री रवि किशन, श्री सुब्रत पाठक, श्री संजय सदाशिवराव मांडलिक, श्री सुधीर गुप्ता, श्री बिद्युत बरन महतो, श्री प्रतापराव जाधव, श्री श्रीरंग आप्पाबारणे और श्री धैर्यशील संभाजीराव माणे के अतारांकित प्रश्न संख्या 4595 के भाग (क) से (च) के उत्तर से संबंधित विवरण।

(क) से (ग): जी हां। इन परियोजनाओं का ब्यौरा निम्नानुसार हैः-

क्र.सं.	परियोजना का नाम	लंबाई (किमी)	वर्तमान स्थिति
1.	टोरी से शिवपुर तीसरी लाइन	44.37	कार्य प्रगति पर है
2.	एमसीएल की आईबी वैली कोलफील्ड में झारसुगुडा-बारपाली-सरडेगा रेल लिंक का दोहरीकरण	50.3	कार्य प्रगति पर है
3.	एमसीएल की तालचेर कोलफील्ड में मौजूदा ड्यूलबेरा साइडिंग के साथ लिंगराज सिलो की रेल संपर्कत्ता	4.8	कार्य पूरा हो गया है।
4.	भद्राचलम से सत्तुपल्ली तक रेल लाइन	54.1	कार्य प्रगति पर है
5.	शिवपुर से कथोटिया तक रेल लाइन	49.09	कार्य प्रगति पर है
6.	ईस्ट कोरिडोर का दोहरीकरण (चरण I) खरसिया-कोरिचपर-धर्मजयगढ़	148	कार्य प्रगति पर है
7.	ईस्ट-वेस्ट रेल कोरिडोर का दोहरीकण (गेवरा रोड-पेंड्रा रोड)	135	कार्य प्रगति पर है
8.	महानदी कोल रेलवे लिमिटेड (एमसीआरएल) द्वारा भीतरी कोरिडोर के भाग के रूप में अंगुल-बलराम रेल लिंक	14.22	कार्य प्रगति पर है
9.	शक्तिनगर से करैला रोड तक रेल लाइन का दोहरीकरण	45	कार्य प्रगति पर है
10.	सिंगरौली से महादिया और महादिया से कटनी खंड का दोहरीकरण	260	कार्य प्रगति पर है
11.	बरकाकाना-बरवाडीह-गरहवा रोड खंड में पतरातू-टोरी-सोन नगर तक तीसरी लाइन	291	कार्य प्रगति पर है
12.	झारसुगुडा से बिलासपुर तक चौथी लाइन	206	कार्य प्रगति पर है
13.	डीएफसी का दोहरीकरण-दादरी से सोन नगर एवं कोडरमा तक विस्तार	1100 (लगभग)	कार्य प्रगति पर है
14.	तालचेर से बुधपंक तक तीसरी और चौथी लाइन और बुधपंक से रजतगढ़ तक तीसरी लाइन	72	कार्य प्रगति पर है

(घ) से (च) वर्तमान में, रेल मंत्रालय ने दो समर्पित माल गलियारों (डीएफसी) यथा लुधियाना से सोन नगर तक (1337 किमी) पूर्वी गलियारा और जवाहरलाल पोर्ट टर्मिनल (जेएनपीटी) से दादरी तक (1506 किमी) पश्चिमी डीएफसी का कार्यान्वयन कर रहा है। इस समय, डीएफसी के 2483 किमी में से 1110 किमी पूरा हो गया है। पूर्वी डीएफसी कोयला, खनिज, सीमेंट, निर्मित इस्पात और अन्य थोक पण्यों की मांग को पूरा करेगा। पूर्वी डीएफसी देश के पूर्वी भाग से कोयले को उत्तर भारत के पश्चप्रदेशों में स्थित थर्मल पॉवरहाऊसों के लिए शीघ्रता से पहुंचाना सुविधाजनक बनाएगा। रेल मंत्रालय ने निम्न मार्गों पर नए समर्पित माल यातायात गलियारों के लिए सर्वेक्षण और विस्तृत परियोजना रिपोर्ट हेतु स्वीकृति दी है और डीपीआर के परिणाम इन नए डीएफसी कोरिडोरों के लिए विचार करने का मुख्य आधार होंगे।:

(i) पूर्व तट गलियारा (खड़गपुर-विजयवाड़ाः लंबाई 1115 किमी)

(ii) पूर्व-पश्चिम गलियारा: (पालघर-भुसावल-नागपुर-खड़गपुर-दानकुनीः 2163 किमी और राजखरस्वान-कालीपहाड़ी-अंडालः 195 किमी)।

(iii) उत्तर-दक्षिण उप गलियारा (विजयवाड़ा-नागपुर-इटारसीः 975 किमी)।

डीएफसी का निर्माण करना बड़े पैमाने पर रेल यातायात पारवहन क्षमता के आवर्धन के उद्देश्य से रेलवे की दीर्घकालिक रणनीति है। डीएफसी परियोजनाओं के शुरू होने से माल एवं यात्री सेवाओं के पृथक्करण का मार्ग सुनिश्चित होगा और परिणामस्वरूप, भारतीय रेल के कुछ महत्वपूर्ण ट्रंक मार्गों पर संकुलन कम होगा।

*****